आधुनिक शिक्षा और भारतीय राष्ट्रवाद

डॉ जय प्रकाश*

वर्तमान वर्षों में राष्ट्रीयता के उदय के संबंध में बहुत कुछ लिखा गया है परंतु कई प्रश्नों के निर्णायक उत्तर नही मिल सके हैं। क्या भारतीय राष्ट्रवाद के सिद्धांत यूरोप से प्राप्त किए गए थे या वे भारतीय धरती व संस्कषति की उपज थे? राष्ट्रीय आंदोलन यूरोप के सांस्कषतिक हस्तक्षेप के कारण हुआ या इंग्लैंड के राजनीतिक प्रभुत्व के कारण? इतना ही महत्पवूर्ण प्रश्न यह है कि भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अंग्रेजी शिक्षा का कहाँ तक योगदान था। यदि भारत में अंग्रेजी षिक्षा का अस्तित्व न होता तो क्या भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हो सकता था? राष्ट्रीय चेतना की उत्पत्ति राष्ट्रवाद का जन्म तथा राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभ के लिए प्रायःपश्चिमी आधुनिक शिक्षा प्रणाली को (जिसे अंग्रेजों ने भारत में शुरू किया था) श्रेय दिया जाता है। परंतु यह भावना एवं विष्वास वास्तविकता से दूर है यदि इस षिक्षा की नींव न रखी जाती तो क्या राष्ट्रभावना एवं चेतना की उत्पत्ति न होती? क्या तब भारत विदेशी शासन के विरूद्ध आवाज न उठाता? क्या वैसी स्थिति में विदेशी शासन के विरूद्ध असंतोष नही पनपता?

चीन, फारस, यूनान, तुर्की और अन्य देशों के इतिहास के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि जिन देशों में अंग्रेजी षिक्षा का कोई अस्तित्व नहीं था वहाँ भी राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। यदि मुगल शासन कुछ और समय तक चलता रहता तो क्या भारत में यह संभव नहीं था कि कालांतर में राष्ट्रीयता का उदय होता? यूरोपीय देशों के साथ व्यापारिक और अन्य संबंधों के कारण भारत में आधुनिकता व राष्ट्रवाद का प्रारंभ हो सकता था या नहीं?

अनेक ब्रिटिश राजनेताओं का दष्ढ़ विश्वास है कि भारतीय राष्ट्रवाद भारत में अंग्रेजो द्वारा लाई गई आधुनिक षिक्षा का परिणाम है। वे यह दावा करते हैं कि आधुनिक शिक्षा ने भारतीयों को पाश्चात्य चिंतको द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्रता संबंध ी सिद्धांतों से परिचित कराया। जिसके कारण भारतीय जनता में स्वतंत्रता की भावना जागष्त हुई। आधुनिक शिक्षा की भूमिका प्रगतिशील थी परंतु यह सत्य नहीं है कि भारतीय राष्ट्रवाद इस षिक्षा की संतति है। भारत में राष्ट्रवाद का जन्म किसी एक कारण से नहीं हुआ।

ब्रूस टी0 मैकली लिखते हैं, यह स्पष्ट है कि उन्नीसवीं सदी के आठवें व नवें दशकों का राष्ट्रवाद विदेशी संस्कषति के दबाव से प्रकट हुआ। राष्ट्रीय भावनाएँ अपने आप में भारत की भूमि पर जीवित नहीं हुई, वरन् वे एक विदेशी उपज थीं। ब्रिटिश राज और उसके अंतर्गत विदेशी प्रभुत्व के तत्वों के बिना भारतीय राष्ट्रीयता के उदय की कल्पना करना कठिन है।

***इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार**

विदेशी शासन ने राष्ट्रीय भावनाओं के उदय के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया और विदेशी शिक्षा ने समय पर ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग को जन्म दिया जो इन विचारों को आत्मसात करने को तत्पर था।

इसमें संदेह नहीं कि प्रारंभिक राष्ट्रीय विचारधारा पर यूरोपीय विचारों का अध्यारोपण था। यूरोप के मैजिनी जैसे विचारकों के सिद्धांतों से भारतीय राष्ट्रीय नेता प्रभावित थे। प्राक–ब्रिटिश भारतीय साहित्य में राष्ट्रवाद पर कोई पुस्तक नहीं थी। इसका ऐतिहासिक कारण यह था कि आर्थिक पिछड़ेपन के कारण भारतीय लोग सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक राष्ट्र के अभिन्न अंग नहीं बन सके थे। अतः प्राचीन भारतीय साहित्य में राष्ट्रवाद तत्व नहीं थे।

ब्रूस टी0 मैकली के अनुसार भारत के उदारवादी राष्ट्रवादियों ने, जिनमें बनर्जी, नौरोजी और मेहता थे, अपनी कोई विचारधारा आरंभ नहीं की। उन्होने उन सिद्धांतों को अनुमोदित या परिवर्तन के साथ प्रतिपादित किया जो उन्होंने पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन से प्राप्त किए थे। भारत में या इंग्लैंड और अन्य देशों के विद्याालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीयों ने भारतीय राष्ट्रवाद के सिद्धांतों को ग्रहण किया। ब्रिटिश इतिहास व राजनीतिशास्त्र के अध्ययन से भारतीय बुद्धिजीवियों को इन सिद्धांतों का ज्ञान हुआ।

शिक्षित भारतीयों ने अंग्रेजी जनतांत्रिक साहित्य का अध्ययन किया और उनसे प्रभावित हुए। इसके कारण भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को जनतांत्रिक आध ाार मिला। अतः अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से जनतांत्रिक व बुद्धिजीवी दषष्टिकोण का उदय हुआ। साथ ही इस षिक्षा पद्धति ने उन शिक्षित भारतीयों को जो देश के विभिन्न कोनों में थे, आपस में एक होने, विचार–विमर्श करने का एक शक्तिशाली माध्यम दिया। विदेशों कें समाचार इन्हें अंग्रेजी समाचार–पत्रों एवं 'रायटर' से प्राप्त होते थे। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ये उसे प्राप्त करते थे। 19वीं शताब्दी एवं प्रेस के तीव्र विकास के परिणामस्वरूप शिक्षित भारतीयों में, उनके विचारों तथा कार्यों में एक नई प्रकार की एकता के चिह्न दषष्टिगोचर होते हैं। यूरोपीय ढंग से शिक्षित–भारतीयों ने ब्रिटिश राज्य से संघर्ष करने का पुराना ढंग त्याग दिया। उन्होंने समाचार–पत्र चलाए, सार्वजनिक सभाएँ कीं, दबाव गुटों को संगठित किया और पश्चिमी ढंग पर राष्ट्रीय संस्थाओं तथा राजनीतिक संगठनो की स्थापना की। शिक्षण– संस्थाओं, समाचार–पत्रों आदि पर उनका ही नियंत्रण एवं प्रभाव था। इस शिक्षित वर्ग का (उनकी संख्या के अनुपात में) समाज पर अत्यधि ाक प्रभाव था। ये तथाकथित 'अच्छी सरकार' (ब्रिटिश सरकार उनके राज्य तथा प्रशासन) को स्वराज्य या स्वशासन के स्थान पर नहीं स्वीकार कर सकते थे।

आरंभिक राजनीतिक व आर्थिक राष्ट्रवाद पर विदेशी षिक्षा का प्रभाव काफी हद तक दिखाई देता है। गैर–राजनीतिक राष्ट्रवादी सिद्धांतों पर भी विदेषी प्रभाव था। भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से एक सांस्कषतिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई क्योंकि भारतीय रीति–रिवाज और आचार–व्यवहार पश्चिम यूरोप की

परिस्थितियों, संस्थाओं, जीवन–मानदंडों से पूर्णतः भिन्न थे। हिंदू सांस्कषतिक राष्ट्रवाद इस संघर्ष के परिणामस्वरूप उदित हुआ। अतः भारत के प्रारंभिक राष्ट्रवादियों में दो प्रकार के विचार मिलते हैं। पहली विचारधारा अंग्रेजी राजनीतिक व आार्थिक सिद्धांतों से प्रभावित थी और समकालीन यूरोपीय राष्ट्रीयता से मुख्य प्रेरणा ग्रहण करती थी। दूसरे विचारधारा विदेशी सभ्यता के बढ़ते हुए प्रभाव और देश के पाश्चात्यीकरण की प्रतिकिया से उत्पन्न हुई जो प्राचीन भारतीय संस्कषति के पुनर्जागरण का प्रतिपादन करती थी।

बंगाल के बुद्धिजीवी अपने अतीत का इस प्रकार से पुनः अन्वेषण करना चाहते थे जिससे वर्तमान परिवर्तित किया जा सके। अतः वे रूढ़िवादी नहीं थे और आधुनिकता के समर्थक थे परंतु पाश्चात्यीकरण के नहीं। वे ऐसा परिवर्तन चाहते थे कि जिसमें विदेशी संस्कषति को भारतीय परंपराओ से समन्वित किया जा सके। परंतु मैकॉलेवाद के द्वारा जब ब्रिटिश सरकार ने भारत पर पाश्चात्य संस्कषति को आरोपित करने की नीति अपनाई तो भारतीय जनजीवन उत्साह से अपनी संस्कषति व परंपरा से प्रेरणा लेने लगा और उनमें राष्ट्रीय गर्व की भावना का विकास हुआ।

वास्तविक रूप से अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्ग की राष्ट्रीय आंदोलन में क्या भूमिका थी यह विषय विवादास्पद है। आँकड़ों से स्पष्ट है कि भारत में इस वर्ग की संख्या अत्यंत सीमित थी। आधुनिक शिक्षा की प्रगति काफी अवरूद्ध सी रही और भारतीय जनता की उन्नति की दषष्टि से वह प्रगति असंतोषजनक भी थी। आधुनिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था ब्रिटिश शासन को कार्यकर्ता देना, इसलिए जनसाधारण की शिक्षा की पूर्णतः उपेक्षा की गई थी। सौ साल के ब्रिटिश शासन के पश्चात भी 1911 में भारतीय आबादी 94 प्रतिशत लोग निरक्षर थे और 1931 में 92 प्रतिशत। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में कुल आबादी के केवल 19 प्रतिशत विद्यार्थी थे जिनमें से केवल पाँचवें भाग से भी कम लोग अंतिम कक्षा तक पहुँचतें थे। 1941–42 में उच्च शिक्षण– संस्थानों के अध्येताओं की संख्या 159,254 थी जो जनसंख्या की 0.5 प्रतिशत थी। श्लेवंकर के अनुसार सबसे अधिक अभाव तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में था। कषषि, वाणिज्य और अभियांत्रिकी जैसे क्षेत्रों में अमेरिका के आइयोवा जैसे राज्य में भी, जहाँ की जनसंख्या ब्रिटिश भारत की जनसंख्या का केवल एक प्रतिशत है, भारत से अधिक छात्र हैं।

1930 तक भारत की जनसंख्या के केवल 2 प्रतिशत व्यक्ति अंग्रेजी बोल व समझ सकते थे। ये शिक्षित और व्यवसायी वर्ग शहरों के निवासी थे। आरंभ में राष्ट्रीय आंदोलन में इन्हीं का प्रधान्य था। इसलिए आरंभिक भारतीय राष्ट्रवाद, आन्दोलन नहीं था। अंग्रेजी शिक्षा के समान ही यह एक नगरीय तत्व था जिसका इस कृषिप्रधान देश में कोई संबंध नहीं था। यह शिक्षित वर्ग जनसाधारण से संपर्क नहीं रखा। इसी कारण प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सशक्त नहीं बन सका। जहाँ कहीं भी राष्ट्रीय आंदोलन जनांदोलन का रूप धारण किया, उसकी सफलता में अंग्रेजी भाषा का लेशमात्र भी योगदान नहीं था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रवाद ने एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप लिया। भारत के शिक्षित वर्ग के उदय व उद्योगों के विकास के साथ भारतीय औद्योगिक बुर्जुआजी (माध्यम) का जन्म हुआ। इन्हीं वर्गों ने राष्ट्रीय आंदोलन का संगठन किया और सरकारी नौकरियों के भारतीयकरण, भरतीय उद्योगों की सुरक्षा, स्वायत्ता आदि की माँग की। विभिन्न वर्गों की अलग–अलग माँगें थी। उद्योगपति भारत का उद्योगीकरण और देशी उद्योगों की सुरक्षा चाहते थे। शिक्षित वर्ग नौकरियों का भारतीयकरण चाहते थे। किसान भूमि कर कम कराना चाहते थे। मजदूर अच्छी कार्य–दशाएँ और अधिक मजदूरी चाहते थे। आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में ब्रिटिश और भारतीय हितों के संघर्ष के कारण राष्ट्रीय आंदोलन का जन्म हुआ।

बिपिनचंद्र पाल के अनुसार भारत का राष्ट्रीय आंदोलन साम्राज्यवाद और इसकी शोषण–व्यवस्था से पैदा हुआ। शिक्षा व्यवस्था चाहे जो भी रहती, भारतीय बुर्जुआजी का उदय और ब्रिटिश बुर्जुआजी को दूसरी सारी विचारधाराओं से अलग संस्कृत में लिखे गए वेदों की ही शिक्षा मिलती रहती तो उन्हे वहीं अपने संघर्ष के सिद्धांत और नारे मिल जाते।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय राजनीतिक आंदोलन आधुनिक शिक्षा पद्धति का प्रत्यक्ष व अनन्य परिणाम नहीं था। यह कहना इतिहास के नियम के विरूद्ध होगा कि केवल अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीयों में राष्ट्रवाद पनपा। कोई भी राष्ट्र विरोध और असंतोष उत्पन्न किए बिना किसी दूसरे राष्ट्र पर दीर्घकाल तक शासन नहीं कर सकता। अतः यदि अंग्रेजी शासको ने भारतीयों को शिक्षित करने का प्रयत्न न भी किया होता तो भी कुछ समय उपरांत विदेशी शासन के विरूद्ध राजनीतिक आंदोलन अवश्यंभावी था। यदि राष्ट्रीय आंदोलन केवल अंग्रेजी शिक्षित व्यक्तियों तक ही सीमित रहता तो वह कभी जन आंदोलन नहीं बन सकता था। अंग्रेजी शिक्षा का योगदान केवल परोक्ष रूप में था, क्योंकि इसने भारतीयों को पाश्चात्य राजनीतिक जीवन का ज्ञान दिया और संघर्ष का मार्ग दिखाया।

संदर्भ सूचीः–

1. ब्रूस टी0 मैकली, इंग्लिश एजूकेशन एण्ड द ओरिजीनस ऑफ इंडियन नेशनलिज्म।
2. अग्निहोत्री रविन्द्र– भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या, दिल्ली रिसर्च पब्लिकेशन।
3. अग्रवाल वाई0 पी0–रिसर्च इन इमर्जिंग फील्डस ऑव एजूकेशन, नई दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिकेषन।
4. अग्रवाल जे0 सी0–लैण्डमार्क इन दॉ हिस्ट्री ऑव मोडर्न इन्डियन एजूकेशन, नई दिल्ली : वाणी बुक्स।
5. मलैया, विद्यावती– भारतीय शिक्षा की समस्यायएं, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
6. मुखर्जी, एस0 एन0–एजूकेशन इन इन्डियन एजूकेशन, नई दिल्ली आर्य बुक डिपो।
7. सितारमैया पट्टाभि : दि इंडियन अनरेस्ट (1910)।
8. जय प्रकाश नारायण : फ्रॉम सोशालिज्म टू सर्वोदय।
9. दयानंद सरस्वती : सत्यार्थ प्रकाश।
10. भाई परमानन्द : हिन्दू संगठन (लाहौर, सेन्ट्रल हिन्दू युवक सभा, 1936)।